Introduction

प्राक्कथन

प्रायः सभी भाषाओं का साहित्य समाज की लोक संस्कृति से अनुप्रेरित रहा है । या कहा जा सकता है कि लोक-साहित्य ही शिष्ट साहित्य का आदि जनक रहा है, साहित्य की संरचना में लोक संस्कृति का प्रदान सर्वोपरि रहता है । समाज में संस्कारों के विविध अनुष्ठानों में मांगलिक गीत गायन की परंपरा आदिम् युग से रही है, व्यक्ति, हर्ष और विषाद के क्षणों को भी गुन गुनाता है, इस प्रकार मन के संवेद्यभावों को रागात्मक ध्वनि में गुनगुनाने की मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति सर्वविदित ही है ।

गुजरात में भी साहित्य की मांगलिक प्रतिष्ठा लोकप्रागण मे ही हुई थी । समाज का सर्वोपरि महत्वपूर्ण विधायक तत्व धर्म माना गया है । धर्म समाज की आचार संहिता निरुपित करता है । नीतियों की सरचना करता है, आदर्श और सर्वहितकारी मार्ग को प्रशस्त करता है, अतः साहित्य में जब सामाजिक दखल के नजरिये को स्पष्ट करते हैं तो सर्वप्रथम धर्म-तत्व की बात अहम् रूप मे सामने आती है । गुजरात का हिन्दी साहित्य भी इसी धर्म-परिवेश में पल्लवित और परिवर्द्धित हुआ है ।

वैसे तो गुजरात में हिन्दी या हिन्दवी या रेखता के नाम से गीतों एवं कवित्तों का प्रचलन बहुत प्राचीन है, चारण और भाट परम्परा में ब्रजभाषा के घनाक्षरी कवित्तों का समावेश बहुत प्राचीन काल से प्रचलित है, किन्तु गुजरात में साहित्य का व्यवस्थित और सतत् सृजन जैन-साहित्यकारों से माना जा सकता है । शालिभद्र सुरि से लेकर माणिकचन्द्र सुरि तक जैन कवियों के धर्म-सम्मत काव्य लोक-प्रांगण में प्रतिष्ठित हुए हैं ।

गुजरात के प्रबुद्ध और भावुक प्रशासकों ने भी उदार मन से जैन धर्म को प्रश्रय और संरक्षण प्रदान किया । जैन मंदिरों के निर्माण में अपनी उदारवृत्ति का परिचय दिया ।

इसी प्रकार वैष्णवधर्म भी यहाँ पल्लवित तथा विकसित हुआ । श्रीमहाप्रभुजी एवं श्री गुसाईजी ने यहाँ की यात्राएं कीं, वैष्णव सम्प्रदाय का प्रचार एवं प्रसार किया तथा अनेक धर्मकेन्द्र स्थापित किए । नन्दनन्दन श्री कृष्ण की माधुर्य लीलाओं के प्रति लोकाकर्षण पैदा हुआ और फिर गुजरात के समग्र अंचल में कृष्ण भक्ति का प्रमाद छा गया । श्री महाप्रभु जी ने श्रीमद्भागवत की कृष्णकथा का यहाँ प्रचार किया । अष्टछाप के कवियों की सरस पदावलियों में भी कृष्णलीला की अमृतधारा निर्झरित हुई, गुजरात के ही श्रीकृष्णदास अधिकारी के सरस पदो में भक्ति और साहित्य का अमिय रस प्रवाहित हुआ और समग्र गुजरात कृष्णभक्ति के प्रमाद में सराबोर हो गया। गुजरात में हिन्दी साहित्य का मध्यकाल से ही विकास प्रारंभ हो गया था, नरसिंह मेहता की भक्तिपूर्ण पदावलियाँ ब्रजभाषा में भी लोकप्रिय रही हैं, फिर भालण, अखा, दयाराम जैसे समृद्ध भक्त कवियों ने अपनी सरस वाणी से इसे और भी वरिष्ठ सम्पन्नता प्रदान की । आधुनिक युग में भी ब्रजभाषा का वर्चस्व गुजरात की साहित्य उर्वरा धरती पर देखा जा सकता है जब कच्छ भुज की ब्रजभाषा काव्य पाठशाला की कीर्ति समग्र देश में फैल चुकी थी ।

गोविन्द गिल्लाभाई ब्रजभाषा काव्य गगन के एक ऐसे प्रोज्ज्वल नक्षत्र थे जिनकी आभा सुदूर उत्तराचल तक व्याप्त रही है । एक तो अहिन्दी भाषी क्षेत्र के निवास, दूसरे साहित्यिक वातावरण से दूर, तीसरे शिक्षा-दीक्षा एवं अध्ययन अध्यापन की कमी, फिर भी गोविन्द गिल्लाभाई ने अपने स्वयं के प्रयासों से तथा आत्मजिज्ञासा एवं लगन से ब्रजभाषा साहित्य के इतिहास में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया तथा अपनी प्रतिभा एव लगन के बल पर समस्त भारत वर्ष में अपनी कीर्ति पताका फहरा दी ।

वैसे भी मध्यकाल में ब्रजभाषा राष्ट्रीय स्तर पर काव्य की मानद भाषा के रूप में सर्व स्वीकार्य थी । हिन्दी क्षेत्रों के अतिरिक्त गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, बंगाल, उडीसा, पजाब जैसे क्षेत्रों में हिन्दी का वर्चस्व स्थापित था तथा ब्रजभाषा काव्य के प्रति सर्वत्र सम्मोहन भी था । गुजरात के भक्त समुदाय की संवेदनात्मक कोमल भावधारा में ब्रज से उठी ब्रजभाषा की रसमयी झंकार ने जो रग घोला वह बहुत समय तक बना रहा ।

गुजरात के पुष्टिमार्ग के आचार्यों का तथा उनकी कृष्ण भक्तिधारा का भी प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है । महाप्रभुजी तथा गो विट्ठलनाथजी ने सेवाविधान में साहित्य और संगीत

को जोडकर भक्त समुदाय में ब्रजकाव्य के प्रति रुचि जाग्रत कर दी । यहाँ वैष्णव भक्ति का रूप पौराणिक और सम्प्रदाय निरपेक्ष रहा है । यही कारण है कि गीता के योगेश्वर और महाभारत के युद्धेश्वर की अपेक्षा कृष्ण के रणछोड रूप के मंदिर गुजरात में डाकोर के अलावा और भी अनेक गाँव नगरों में मिल जाते हैं । राधास्वामी, रामानन्दी, राधावल्लभी, स्वामीनारायण आदि सम्प्रदायों ने भी अपने भक्ति सिद्धान्तों का प्रसार ब्रजकाव्य के द्वारा ही यहाँ किया था । जयदेव और विद्यापति से चली आ रही भक्ति और शृंगार से समन्वित अविधारा यहाँ प्रवाहित रही है, यह वृत्ति यहाँ के ब्रजभाषा कवियों में सर्वत्र देखी जा सकती है ।

मध्यकालीन साहित्य अविधारा में यहाँ जैन धर्म का भी पर्याप्त प्रभाव रहा है । सिद्धराज जयसिंह एवं कुमारपाल के राजगुरु हेमचन्द्राचार्य उच्चकोटि के जैनाचार्य साहित्यकार थे । मथुरा के नैमीनाथ ने यहाँ के गिरिनार पर तपस्या की थी तथा जैन के बाईसवे तीर्थकर का पद उपलब्ध किया था । इस कारण भी गुजरात और ब्रजभूमि दोनों ही प्रदेशों में जैनधर्म का प्राबल्य होने के कारण भाषायी ऐक्य के रूप में ब्रजभाषा का प्रभुत्व देखा जा सकता है।

पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में स्वामी रामानन्द ने द्वारका, सिद्धपुर, गिरिनार, आबू आदि स्थानो का पर्यटन करके वैष्णव भक्ति का प्रचार किया था । यह भी कहा जाता है कि स्वामी रामानन्द ने कबीर, पीपा, योगानन्द आदि शिष्यों को गुजरात में वैष्णव भक्ति के सामानान्तर रामभक्ति के प्रचारार्थ भेजा था । निम्बार्काचार्य तथा मध्वाचार्य की राधाकृष्ण की युगलभक्ति का यहाँ प्रचार हुआ, आचार्य हितहरिवंश के विशिष्ट आत्मीय शिष्यों में गुजरात के विट्ठलदास का उल्लेख मिलता है । भरुच, सूरत, अंकलेश्वर, बडौदा, अहमदाबाद, कच्छ आदि अनेक नगरों में राधा वल्लभीय मंदिर स्थापित हो गए । गुजरात के अधिकांश गांवों में पुष्टिमार्गीय वैष्णव आचार्यों की हवेलियाँ ब्रजभाषा के कीर्तन पदों की रस लहरियो में झंकृत होने लगी ।

धर्मसम्प्रदायों के प्रभाव के साथ-साथ यहाँ वैष्णव मतानुयायी धर्मग्रंथों का भी प्रभाव रहा । श्रीमद् भागवत, रामायण तथा गीता का प्रभाव यहाँ की गुजराती जनतापर अनवरत रहा है । यहाँ के अधिकांश कवियों ने भागवत के दशमस्कंध से प्रेरणा ग्रहण करके कृष्णलीला का बखान किया है । इसमें रुक्मणी हरण, दानलीला, बाललीला, अक्रूर लीला, गोकुल लीला, द्वारका लीला आदि के कथ्य को पदों, साहित्यों, भजनों एवं कीर्तनों में गाया गया है ।

उन्नीसवीं शताब्दी में यहाँ चारण-भाटों के द्वारा ब्रजभाषा कविता को दरबारों में सम्मानित कराया गया । ब्रजभाषा काव्य के प्रतिकुलीन और राजदरबारी रुझान को देखकर

आम लोगों में भी ब्रजभाषा के प्रति रुझान पैदा हुआ और ब्रजकाव्य को पढने समझने की ललक भी पैदा हुई । इसी आवश्यकता का अनुभव करके कच्छ के महाराजा लखपतिसिंह ने कच्छ में ब्रजभाषा काव्य पाठशाला की स्थापना की जिसमें प्रथम कुलपति जैन आचार्य भट्टारक कनककुशल थे, इन्हीं के मेधावी विद्वान शिष्य कुँवर कुशल ने उत्तराधिकारी बनकर ब्रजभाषा पाठशाला का आचार्यत्व ग्रहण किया और कालयजी कृति 'लखपति जससिंधु' लिखकर गुजरात की लक्षणग्रंथ रचना की परम्परा को ओजस्विता प्रदान की ।

ब्रजभाषा के इसी रुझान ने काठियावाड के सिंहोर गॉव के निवासी आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाई को प्रभावित किया, राजदरबार में इनके पिता दीवान थे तथा इनकी भेंट राजपरिवार के सदस्यों, आगन्तुक अतिथियों एवं विद्वान कलाकारों से होती रहती थी ।

गोविन्द गिल्लाभाई अपने समय के सर्वाधिक सक्षम, समर्थ और प्रतिभावान आचार्य कवि थे । जिन्होंने गुजराती भाषी होते हुए भी हिन्दी क्षेत्र के वरिष्ठ कवियों की पंक्ति में अपना नाम संलग्न कराया ।

गोविन्द गिल्लाभाई एक अध्यवसायी विद्वान साहित्यकार थे । इनके अनेक रूप सामने आते हैं । लक्षण ग्रंथकार के रूप में, शृंगार एवं भक्तिपरक काव्य रचनाकार के रूप में, विवेचक के रूप में, कर्ता के रूप में, इतिहास लेखक के रूप में सम्पादक के रूप में तथा अन्वेषक शोधार्थी के रूप में । इससे पहले इनके आचार्यत्व पर अध्ययन किया जा चुका है । इनके स्वयं के कृतित्व को विवेचित किया जा चुका है किन्तु इनके द्वारा महत्वपूर्ण संकलित तथा सम्पादित साहित्य को मूल्यांकित नहीं किया गया ।

ब्रजभाषा काव्य के प्रति मेरी रुचि प्रारंभ से ही रही है । प्रारंभ में रसखान के सवैये, सूर के पद, मीरा के भजन मुझे आकर्षित करते थे । स्नातकोत्तर अध्ययन में मध्यकालीन साहित्य के पाठ्यक्रम में ब्रजभाषा के लालित्य का मुझे अनुभव हुआ और मैने तभी तय कर लिया था कि एम ए के उपरान्त मैं ब्रजभाषा काव्य को लेकर ही शोधकार्य सम्पन्न करूँगा ।

जब मैंने अनुभव किया कि गुजरात के वरिष्ठ कवियों में गोविन्द गिल्लाभाई का सम्पादित कार्य अभी अछूता पड़ा है और अत्यन्त महत्व का है, तो मैंने इसी विषय पर अपना शोध प्रबंध लिखने का निश्चय कर लिया ।

संयोग और सौभाग्य से ब्रजभाषा साहित्य के सर्जक एवं अधिकारी विद्वान डॉ. विष्णु चतुर्वेदी का मार्गदर्शन भी मुझे सुलभ हो गया जिससे मेरा कार्य और भी सुगम हो गया ।

गुजरात के हिन्दी साहित्य तथा ब्रजभाषा काव्य की महत्ता को ज्ञापित करने वाले

अनेक शोधार्थी अन्वेषक विद्वानो ने इस विषय कार्य किया है । डॉ अम्बाशंकर नागर, कुँवर चन्द्रप्रताप सिंह, डॉ. महोब्बत सिंह चौहान, डॉ मालारविन्दम्, डॉ रमणलाल पाठक, डॉ. दयाशंकर शुक्ल, डॉ. निर्मला असनानी, डॉ के.एम.शाह, डॉ. रानू मुखर्जी, डॉ. गोवर्द्धन शर्मा, डॉ शशि अरोरा, डॉ. किशोर काबरा प्रभृति विद्वानों ने विभिन्न दृष्टियों से इस विषय पर दृष्टिपात किया है । विभिन्न गुजराती विद्वानों नें भी इस दिशा में अपने प्रयास जारी रखे हैं । गुजरात में अनेक ग्रंथागारों, पुस्तकालय वाचनालयों, जैन देरासरों, मंदिरों, हवेलियों तथा शिक्षण संस्थाओं में हजारों हिन्दी की हस्तलिखित पांडुलिपियाँ सुरक्षित हैं । अनेक राजघरानों तथा धर्माचार्यों के उत्तराधिकारियों एवं साहित्यकारों के वंशजों के पास उनके निजी ग्रंथ संग्रह हैं, जिनमें इस प्रकार के हस्तलिखित ग्रंथ उपलब्ध है । इन सभी ग्रंथों में ब्रजभाषा साहित्य के ग्रंथों का परिमाण सर्वोपरि है ।

गोविन्द गिल्लाभाई के अधिकांश साहित्य ग्रंथ आचार्य कुँवर चन्द्रप्रतापसिंह के सद्प्रयासों से महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बडौदा के हिन्दी विभाग में संग्रहीत किए गए जो बाद में प्राच्य विद्यापीठ में स्थानान्तरित कर दिए गए और अद्यावधि वहाँ सुरक्षित हैं ।

मैंने अपने अध्ययन काल में जाना कि गोविन्द गिल्लाभाई का स्वयं का कृतित्व जितना महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण उनके द्वारा संकलित किया गया साहित्य है । मैंने इस सम्पादन कार्य के परिमाण एव इसकी महत्ता को देखकर इसी विषयपर शोध प्रबंध सम्पन्न करने का निश्चय कर लिया ।

प्रारूप में निश्चित किया गया कि प्रबंध को सात मुख्य अध्यायों में वर्गीकृत किया जाए और पूर्व निर्धारण के अनुरूप यही किया भी गया ।

प्रस्तुत शोध प्रबंध के **प्रथम अध्याय** में आचार्य कवि गोविन्द गिल्लाभाई के जीवनवृत्त को प्रस्तुत किया गया है । जन्म, परिवार, शिक्षा, व्यवसाय, सम्पर्क तथा मुख्य घटनाओं का आकलन इस अध्याय में किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में गोविन्द गिल्लाभाई के समग्र साहित्य का विवरणात्मक विश्लेषण तथा परिचयात्मक वृत्त प्रस्तुत किया गया है । इसमें कवि के मूल लेखन के अतिरिक्त उसकी अनूदित रचनाएँ, गुजराती रचनाएँ, इतिहास, ग्रंथ, संकलित साहित्य, संग्रहीत साहित्य एवं सम्पादित साहित्य का भी परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है ।

तृतीय अध्याय में गुजरात के ब्रजभाषा सम्पादित साहित्य की सम्पादन कला पर

प्रकाश डाला गया है । इसमें आधिकारिक विद्वानों के मंतव्य को आधार बनाकर गुजरात में व्याप्त तथा सृजित ब्रजभाषा के सम्पादित साहित्य का लेखा जोखा तथा उसकी प्राथमिक जानकारी प्रस्तुत की है।

चतुर्थ अध्याय में गोविन्द गिल्लाभाई द्वारा सम्पादित साहित्य का पूर्ण परिचय दिया गया है । इसमें सम्पादित ग्रंथो का विवरण, कवि का परिचय, पांडुलिपियों के प्राप्त करने के स्रोत एवं प्रयासों की चर्चा के साथ सम्पादित ग्रंथों के विभिन्न संस्करणों एवं स्वरूपों की भी चर्चा की गई है ।

पंचम अध्याय में इसी सम्पादन कार्य को विश्लेषित करते हुए इसकी विशिष्टता को ज्ञापित किया गया है । सम्पादन कला की बारीकियों को सामने रखते हुए संग्रह, सकलन, सम्पादन आदि के स्वरूपों को भी स्पष्ट किया गया है ।

षष्ठ अध्याय में गोविन्द गिल्लाभाई के सम्पादित ग्रंथों की महत्ता के साथ-साथ उनकी सम्पादन कला की विशिष्टता को भी रेखांकित किया गया है । इस अध्याय में गोविन्द गिल्लाभाई के समग्र सम्पादन कार्य की महत्ता ज्ञापित की गई है । उसका वैशिष्ट्य स्पष्ट किया गया है ।

सप्तम् अध्याय में सम्पादन कार्य का मूल्यांकन तथा अध्ययन की उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए प्रस्तुत प्रबंध की मौलिकता तथा अभिनवता को भी स्पष्ट किया गया है ।

अन्त मे संदर्भ ग्रंथादि के लिए परिशिष्ट दिया गया है ।

अपने अनुसधान कार्य को सम्पन्न कराने में मेरे मार्गदर्शक डॉ विष्णु विराट चतुर्वेदी, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. पी. के. देसाई, हिन्दी के पूर्व अध्यक्ष डॉ पी.एन. झा तथा डॉ. ए.के गोस्वामी का सहयोग और प्रोत्साहन मुझे मिलता रहा है, मैं हृदय से इनका आभार व्यक्त करता हूँ ।

यदि मेरे पूज्य पिताजी श्री नरेन्द्रसिंह यादव का शुभाशीष तथा आत्मीय आग्रह न मिलता तो सम्भवतः मैं यह शोधकार्य सम्पन्न नहीं कर पाता, उनके प्रति मैं अपनी श्रद्धा ही व्यक्त कर सकता हूँ ।

इस शोध प्रबंध के निबंधन में जिन महानुभावों, विद्वानों, कलाकारों विवेचकों एवं अध्यापकों तथा आत्मीयजनों का प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोग मिला है, मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ ।

——— x ———